International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-09-2022, Accepted: 11-10-2022, Published: 28-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 62-63

महादेवी वर्माः प्रसिद्ध कवियत्री एवम समाज–सुधारक

डॉ. कोंडा चन्द्रा
सहायक आचार्य, एस॰टी॰एस॰एन सरकारी स्नातक कॉलेज, कदिरि, श्री सत्य साई जिला, आंध्र प्रदेश, भारत

सारांश
प्रेम और वेदना की मूर्ति महादेवी वर्मा छायावाद तथा रहस्यवाद की प्रमुख कवियत्री हैं। व्यापक और असीम चेतन सत्ता को अपना प्रियतम मान कर दार्शनिक चिंतन के साथ वे कविता रचती है। मानव जीवन की दशाओं के प्रतीकोण में निहार, संध्यागीत आदि काव्यों की रचना की । बोद्ध करुणा एवं दर्शन का प्रभाव उनकी रचनाओ पर है । आप ' आधुनिक मीरा 'के उपनाम से विख्यात है । महिलाओ के उद्धार के लिए, उनके शिक्षा के लिए महिला विद्यापीठ स्थापित किया।

मूल शब्दः विलक्षण, दार्शनिक, पीड़वाद, आंदोलन

प्रस्तावना

महादेवी वर्मा जी भारतीय हिन्दी साहित्य की एक महान कवियित्री और सुविख्यात लेखिका थी, उन्हें हिन्दी साहित्य के छायावाद युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। महादेवी वर्मा जी ने हिंदी साहित्य जगत में एक बेहतरीन गद्य लेखिका के रुप में अपनी पहचान बनाई थी। महादेवी वर्मा जी एक विलक्षण प्रतिभा वाली कवियित्री थी, जिसके कारण हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध और महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने उन्हें 'सरस्वती' की संज्ञा दी । साथ ही उन्होंने महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की 'मीरा' भी कहा था । क्योंकि उन्होंने अपनी कविताओं में एक प्रेमी से दूर होने का कष्ट एवं इसके विरह और पीड़ा का बेहद भावनात्मक रुप से वर्णन किया था, इनकी कविताओं में पीड़ा तत्व की प्रधानता देखकर आलोचकों ने इन्हे पीड़ावाद की कवियत्री भी कहा है। महादेवी वर्मा जी के अपने ही शब्दों में –– दुख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है।

महादेवी वर्मा जी एक मशूहर कवियित्री तो थी हीं, इसके साथ ही वे एक महान समाज सुधारक भी थीं। आपने भारतीय समाज में महिलाओं की दयनीय दशा को सुधारने और उनको समाज में उचित दर्जा दिलवाने के लिए कई महत्वपूर्ण काम किए। उन्होंने महिलाओं की दशा में सुधार लाने के लिए महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया और महिलाओं के सशक्तिकरण पर विशेष ज़ोर दिया। महिलाओं की स्टीथि में सुधार के दृष्टिकोण से महादेवी वर्मा जी ने महिलाओं को समाज में उनका अधिकार दिलवाने और उचित आदर–सम्मान दिलवाने के लिए कई महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम उठाए थे। इसके साथ ही महादेवी वर्मा जी ने अपने साहित्य के द्वारा भी महिलाओं के प्रति लोगों की संकीर्ण और तुच्छ मानसिकता पर प्रहार किया । समाज में महिलाओं की दयनीय दशा थी । उन्होने महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण के दर्द को बेहद मार्मिक तरीके से व्यक्त किया था। महादेवी जी ने अपनी रचना "श्रृंखला की कड़ियां" में भारतीय समाज की महिलाओं की दुर्दशा का भावपूर्ण एवं ह्रद्य को छू जाने वाला वर्णन किया था। महादेवी वर्मा जी ने पहला महिला कवि सम्मेलन भी शुरु किया था। भारत का पहला महिला कवि सम्मेलन महिला विद्यापीठ में आयोजित किया गया था। इसके अलावा महादेवी वर्मा जी बौद्ध धर्म के उपदेशों से बेहद प्रभावित थी। उनकी इस धर्म के प्रति अटूट आस्था थी। यही नहीं महादेवी वर्मा जी ने देश की आजादी के लिए चल रहे स्वतंत्रता संग्राम में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और श्रृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन–जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई । उन्होने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया। उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी में कविता कर उसमें कोमल शब्दावली का विकास किया जो केवल ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत एवं बंगला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी को सुसज्जित किया । उनको संगीत की में भी प्रवेश होने के कारण उनके गीतों का नाद–सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली जो अन्यत्र दुर्लभ है। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत दोनों में निपुण होने के साथ–साथ कुशल चित्रकार थी । आप एक सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल–विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन–यापन किया। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वे पशु पक्षी प्रेमी थी गाय उनको अति प्रिय थी । महादेवी वर्मा जी को 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया।

महादेवी वर्मा के बाबा श्री बाँके विहारी ने 1916 में महादेवी वर्मा का विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया । उस समय नारायण वर्मा दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इण्टर करके लखनऊ मेडिकल कालेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी भी उस समय क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में थीं। श्रीमती महादेवी वर्मा को विवाहित जीवन से लगाव नहीं था । कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री–पुरुष के रूप में उनके सम्बन्ध मधुर ही

रहे। दोनों में कभी–कभी पत्राचार भी होता था। यदा–कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। श्री वर्मा ने महादेवी वर्मा जी ने अपने पति श्री वर्मा से दूसरी शादी करने को कहा , मगर श्री वर्मा जी ने नहीं किया । अतः महादेवी जी ने अपना जीवन एक सन्यासिनी की तरह व्यतीत किया । उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोईं और कभी शीशा भी नहीं देखा। 1966 में अपनी पति की मृत्यु के बाद वे स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य उनका अपने समय में महिला–शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम रहा। इस विद्यापीठ की वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। उन्होंने 1923 में महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, और 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। इन चारों काव्य संग्रहों को 1939 में उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। महादेवी वर्मा जी ने गद्य, काव्य ,शिक्षा व चित्रकला आदि सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें स्मृति की रेखाएँ ,मेरा परिवार, अतीत के चलचित्र, श्रृंखला की कड़ियाँ एवं पाठ के साथी प्रमुख हैं । महादेवी जी ने इलाहाबाद में 1955 में साहित्यकार संसद स्थापना की और पंडित इलाचन्द्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नीव रखी । इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में 15 अप्रैल 1933 को प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ । वे हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी वर्मा जी बोद्ध पंत से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी जी के प्रभाव से उन् जनसेवा का व्रत लेकर उन्होने झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में भी भाग लिया था । नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने 1936 को एक बंगला बनवाया था। उसका नाम उन्होंने मीरा मन्दिर रखा था। जितने दिन वे वहाँ रहीं, उस गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आज यह बंगला महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। श्रृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज़ उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निन्दा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया है । महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज–सुधारक भी कहा गया है। उनके सम्पूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है।

उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया। इस महान व्यक्ति महादेवी जी का स्वर्गवास इलाहाबाद में 11 सितम्बर 1987 को हुआ था।

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी कविता में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगीत की जैसी त्रिवेणी उनके गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी के गीतों की वेदना, प्रणयानुभूति, करुणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं। पर इन रचनाओं की विरोधी आलोचनाएँ सामान्य पाठक को दिग्भ्रमित करती हैं। आलोचकों का एक वर्ग वह है, जो यह मानकर चलते हैं कि महादेवी का काव्य नितान्त वैयक्तिक है। उनकी पीड़ा, वेदना, करुणा, कृत्रिम और बनावटी है।

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ीबोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिन्दी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण–प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव–हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है। वे हिन्दी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में 1973 में आयोजित तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है ।

यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का सम्पूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासंगिक है। समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

मौलिक रचनाकार के अलावा उनका एक रूप सृजनात्मक अनुवादक का भी है जिसके दर्शन उनकी अनुवाद–कृत 'सप्तपर्णा' 1960 में होते हैं। अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे उन्होंने वेद, रामायण, थेरगाथा तथा अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके 31 चयनित महत्वपूर्ण अंशों का हिन्दी काव्यानुवाद इस कृति में प्रस्तुत किया है। आरम्भ में 61 पृष्ठीय 'अपनी बात' में उन्होंने भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बंध में गहन शोधपूर्ण विमर्ष किया है जो केवल स्त्री–लेखन को ही नहीं हिंदी के समग्र चिंतनपरक और ललित लेखन को समृद्ध करता है।

संदर्भ सूची

1. सहगल, निशा " हिन्दी की सरस्वती : महादेवी वर्मा "
2. सिंह डॉ॰ राजकुमार, विचार विमर्श दृमहादेवी वर्माः जन्म, शैशवावस्था एवं बाल्यावस्थ
3. पाण्डेय गंगाप्रसाद, महियसी महादेवी, इलाहाबाद, भारतः लोकभारती प्रकाशन